## पद १६

(रागः खमाज - तालः त्रिताल) स्विहत कर कीं विषयीं भुललासी, पहा रे गड्या।।धु.।। गुरुमाणिका शरण जा, नमन कर द्वय करा जोडुनि सुखकर, भवहर, प्रियंतर, हितपर, निजधर, पुस रे गड्या।।१।।